



■ बिहार चुनाव :  
एनडीए के खेमे  
में जीत का जशन  
महागठबंधन में  
छाया सज्जनाटा  
- 12



■ थोक नुद्रापटीति  
अवटूरट में 1.21  
प्रतिशत गिरकर  
27 माह के निचले  
स्तर पर  
- 12



■ भारत विथ  
व्यापार संगठन  
में सुधार प्रक्रिया  
का कर्ण नेतृत्व : डॉ.  
नगोजी  
- 13



■ वैमव सूर्यवंशी  
दूसरा सबसे  
तेजी 20 शतक  
जड़ने वाले  
भारतीय बल्लेबाज  
बने - 14

आज का मौसम | 26.0°  
अधिकतम तापमान | 12.0°  
न्यूनतम तापमान | सूर्यस्ति  
सूर्योदय 06.28 | 05.19

मार्गीर्ष कृष्ण पक्ष एकादशी 02:37 उपरांत द्वादशी विक्रम संवत् 2082

# अमृत विचार

| लखनऊ |

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

■ लखनऊ ■ बैंगलोर ■ कानपुर  
■ गुरुदासाबाद ■ अयोध्या ■ हल्द्वानी

शनिवार, 15 नवंबर 2025, वर्ष 35, अंक 286, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 लप्पे

# बिहार में राजग की उबल सेंचुरी

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को दो तिहाई बहुमत, महागठबंधन का हुआ सूपड़ा साफ

पटना, एजेंसी

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने शुक्रवार को बिहार विधानसभा में दो तिहाई बहुमत हासिल कर 202 सीटें जीतकर डबल सेंचुरी मार दी है। निर्वाचन आयोग के मुताबिक, गठबंधन ने 243 में से 202 सीटें जीती है। भाजपा 89 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी है। उसकी सहयोगी जनता दल यूनाइटेड (जदयू) ने 85 सीटें जीती है।

समाचार लिखे जाने तक लोजपा (राम विलास) ने 19 सीटें जीत ली थी। इस (से) में 5 सीटें जीती हैं जबकि राष्ट्रीय लोक मोर्चा ने चार सीटें जीती हैं। राजग खेमे के प्रमुख विजेताओं में उपसुखमंत्री सप्ताधी चौधरी, मंत्री प्रेम कुमार, महेश्वर हजारी, संजय सरावगी और भाजपा की मैथिली ठाकुर शामिल हैं। विपक्षी खेमे से राष्ट्रीय जनता दल (राजद) नेता और 'इंडिया' गठबंधन के मुख्यमंत्री पद के चेहरे तेजस्वी यादव, दिव्यगत महामन शाहवीरीन के पुत्र ओसामा शहाब और भाकपा (माले) लिवरेशन के संदीप सौरव प्रमुख विजेताओं में रहे। इंडिया गठबंधन का प्रदर्शन बेहद खराब रहा और

जनता ने हम पर विश्वास जताया,

बिहार विकसित राज्यों में शामिल होगा

पटना। बिहार के मुख्यमंत्री और जद यू के अध्यक्ष नीतीश कुमार ने प्रचंड जीत पर कहा कि जनता ने उनकी सरकार के प्रति विश्वास जताया है। उन्होंने धनानंदी मोदी, राजग के घटक दलों के मुख्य नेताओं का धन्यवाद भी किया और कहा कि बिहार देश के सबसे ज्यादा विकसित राज्यों की श्रीमि में शामिल होगा। उन्होंने कहा, राज्य के सभी समानित मतदाताओं को मेरा नम, हाय से आभार एवं धन्यवाद।

अब तक वह केवल 33 सीट ही जीत सका है। राजद ने 24 सीट और कांग्रेस ने 6 सीट जीती हैं वामदलों ने तीन सीटें जीती हैं। वहाँ, हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी के नेतृत्व वाली एवं इएमएसीपी के चेहरे तेजस्वी यादव की दर्ज की है। बसपा ने एक सीट जीती है। राजग की जीत के साथ पटना से लेकर दिल्ली का जश्न मनाया गया।

गायिका मैथिली ठाकुर ने महज 25 साल तीन महीने 20 दिन की उम्र में चुनाव जीतकर देश में सबसे कम उम्र में विधायक बने जाने का रिकॉर्ड कायाम किया।

उप मुख्यमंत्री संगाट चौधरी ने तारापुर सीट पर राजद के अणुण कुमार को हराकर 45843 वोटों से जीत हासिल की। राजद नेता तेजस्वी ने राधोपुर सीट से जीत दर्ज की, भाजपा प्रत्याशी सतीश को 14532 वोट से हाराया।



## पेंशन में सरलता, किसानों को मिलेंगे सोलर पंप

योगी कैबिनेट ने 20 प्रस्तावों पर लगाई मुहर, आमजन को दी गई सीधी राहत

• बागपत में मेडिकल कॉर्टेज और शहजहांपुर में नया राज्य विश्वविद्यालय भूमूर्त्र

राज्य व्यूरा, लखनऊ



लोकभवन में मौतीपरिषद की बैठक की अध्यक्षता करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

### इन प्रस्तावों पर नीली लग्ज मुहर

- प्रेज़ (इंडिस्ट्रियल पार्क) नीति में सशोधन - भूमि मारनक, सड़क चौड़ाई, किकास शुल्क रहत।
- इलाहाबाद उच्च न्यायालय - निजी संधिवंश में 150 पदों का उन्नयन।
- नियांत्रित अधिकारियों के वाहन रुपा की सीमा बढ़ावकार 10 लाख रुपये।
- उत्तर प्रदेश लेखपाल सेवा (पंचम संशोधन) नियमावली, 2025 - दो प्रतिशत पदों पर पदोन्नति का प्रवाधन।

बनाएरी और उन लाखों बुजुर्गों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी जिन्हें अब आयोजनात्मक विक्रियों के कारण मदद नहीं मिल पाती थी।

### किसानों को सीधे लाभ

प्रार्थि सं. 2025-26 के लिए एसपीपी पर कैबिनेट ने मुहर लगाई है। हालांकि यह पहले ही मुख्यमंत्री ने घोषित कर दिया था। तय किया गया है कि अग्रेज़ जनति के लिए 400 रुपये, समाज के लिए 390 और अनुप्रयुक्त प्रजाति के लिए 355 रुपये प्रति विवेटल की दर से सरकार खरीद करेगी। दुलाई कटौती व गन्ना सीमितियों के लिए योगदान की दर भी नियमिति की गई है। इससे भूमतान पुनर्निवृत होने की उम्मीद है।

### स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़े फैसले

बागपत में नए मेडिकल कॉर्टेज के लिए मत्र्य विभाग की 5.07 हेक्टेयर जमीन नि शुक्र हस्तान्तरित करने का नियंत्रण लिया गया है। शहजहांपुर में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व की भी सरकारी और चुनावी जीत के लिए राज्य सहयोगियों को बहाउ दी। उन्होंने कहा, बिहार की जनता ने इस भारी जीत और अपने अटूट विश्वास के साथ राज्य में गर्दा उड़ा दिया। राजद के मुख्यमंत्री-यादव समर्थन आधार का स्पष्ट संदर्भ देते हुए मोदी ने कहा कि बिहार में कुछ पार्टी

किसानों के लिए ऊर्जा-स्वतंत्रता-प्रोजेक्ट, महिला श्रृंखला-नियम, औद्योगिक रेशेलेस/जॉनिंग आदि

किसानों के लिए ऊर्जा-स्वतंत्रता-

प्रोजेक्ट, महिला श्रृंखला-नियम, औद्योगिक रेशेलेस/जॉनिंग आदि

किसानों के लिए ऊर्जा-स्वतंत्रता-

प्रोजेक्ट, महिला श्रृंखला-नियम, औद्योगिक रेशेलेस/जॉनिंग आदि

किसानों के लिए ऊर्जा-स्वतंत्रता-

प्रोजेक्ट, महिला श्रृंखला-नियम, औद्योगिक रेशेलेस/जॉनिंग आदि

किसानों के लिए ऊर्जा-स्वतंत्रता-

प्रोजेक्ट, महिला श्रृंखला-नियम, औद्योगिक रेशेलेस/जॉनिंग आदि

किसानों के लिए ऊर्जा-स्वतंत्रता-

प्रोजेक्ट, महिला श्रृंखला-नियम, औद्योगिक रेशेलेस/जॉनिंग आदि

किसानों के लिए ऊर्जा-स्वतंत्रता-

प्रोजेक्ट, महिला श्रृंखला-नियम, औद्योगिक रेशेलेस/जॉनिंग आदि

किसानों के लिए ऊर्जा-स्वतंत्रता-

प्रोजेक्ट, महिला श्रृंखला-नियम, औद्योगिक रेशेलेस/जॉनिंग आदि

किसानों के लिए ऊर्जा-स्वतंत्रता-

प्रोजेक्ट, महिला श्रृंखला-नियम, औद्योगिक रेशेलेस/जॉनिंग आदि

किसानों के लिए ऊर्जा-स्वतंत्रता-

प्रोजेक्ट, महिला श्रृंखला-नियम, औद्योगिक रेशेलेस/जॉनिंग आदि

किसानों के लिए ऊर्जा-स्वतंत्रता-

प्रोजेक्ट, महिला श्रृंखला-नियम, औद्योगिक रेशेलेस/जॉनिंग आदि

किसानों के लिए ऊर्जा-स्वतंत्रता-

प्रोजेक्ट, महिला श्रृंखला-नियम, औद्योगिक रेशेलेस/जॉनिंग आदि

किसानों के लिए ऊर्जा-स्वतंत्रता-

प्रोजेक्ट, महिला श्रृंखला-नियम, औद्योगिक रेशेलेस/जॉनिंग आदि

किसानों के लिए ऊर्जा-स्वतंत्रता-

प्रोजेक्ट, महिला श्रृंखला-नियम, औद्योगिक रेशेलेस/जॉनिंग आदि

किसानों के लिए ऊर्जा-स्वतंत्रता-







## न्यूज ब्रीफ

हादसे में घायल वृद्ध की मौत, मुकदमा दर्ज

सलोन, रायबरेली : सोमवार को सड़क दुर्घटना में घायल वृद्ध की मौत हो गई। पुलिस ने मृतक के देह की तरीके पर वाहन चालक के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया है। कोठावाली अंतर्गत दांदपुर मजरे रायपुर ज़िले निवासी शयमसुंदर सोनी (68) सोमवार की शाम एसवीआई सूरी शाखा के सभीपा सड़क पार कर रहे थे। इस दौरान नेशनल हाईवे रायबरेली की तरफ से आ रहे थे तक टकर रायपुर की वृद्ध की सलोन सोरायरी से रायबरेली रेफर कर दिया गया। वहीं जिला अस्पताल में इलाज उपरांत हालत नाजुक होने पर धायल को लखनऊ रेफर कर दिया गया। परिवारों के मुताबिक गुरुवार तरफ से ही वृद्ध की मौत हो गई। कोठावाल ज़िले का गुरुवार कुमार का जन्म है कि मृतक के पुत्र शिवम सोनी की तरीके पर चालक के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कराया गया है।

## हवन, यज्ञ और भंडारे में उमड़े भक्त

जगतपुर, रायबरेली : शैलपुत्रम गांव में सगंगत यमी श्रीमद्भगवत कथा का विषयालय के बाद शुक्रवार को हवन यज्ञ और विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। इसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने आहुति डालकर प्रसाद प्रणव किया। इस तात्पुरता विद्यार्थी भगवत कथा का आयोजन किया गया। इसमें छात्रों को विद्यालय की प्रधानाचार्य डॉ पी.एम. श्री राजकीय इंटर कालोज में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।









शनिवार, 15 नवंबर 2025

## उच्च शिक्षित आतंकी



हम उस बचे को आसानी से माफ कर सकते हैं, जो अंधेरे से डरता है। जीवन की असली त्रासदी तब होती है, जब लोग प्रकाश से डरते हैं।  
-सुकरात, दाशनिक

उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदेंवेन पटेल की यह चिंता कि पढ़े-लिखे लोग भी अब आतंकवाद की ओर आकर्षित हो रहे हैं, केवल एक राजनीतिक टिप्पणी नहीं बल्कि हमारी शिक्षा प्रणाली, सामाजिक बातचारण और डिजिटल युग के सम्प्रभुत्व संकेत है। यह चिंता इसलिए भी उचित है, क्योंकि पिछले एक दशक में वैश्विक स्तर पर ऐसे अनेक उदाहरण सामने आए हैं, जहाँ ईज़ानियरिंग, निकिल्सा, विज्ञान और उच्च शिक्षा संस्थानों से जुड़े युवाओं ने कट्टरवाहा या हिंसक विचारधाराओं का रास्ता अपनाया। प्रनन् यह है कि जिस शिक्षा से ताकिंकता, विवेक, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मानवता की अवधीनता जीवन की जाती है, वह क्यों कई बार इन अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाती? शिक्षा का लक्ष्य कानूनी से भी डिग्री देना है, दृष्टिकोण नहीं। हम गुणात्मक स्तर, नैतिक शिक्षा, सांस्कृतिक मूल्य, वैज्ञानिक मानविकता और सामाजिक जिम्मेदारी को पालयक्रम के केंद्र में नहीं रख पाए हैं, सो मूल्य-तत्त्व पहाड़ को दोषी ठहराना उचित नहीं। दूष उस सामाजिक और वैचारिक बातचारण में है, जिसमें विद्यार्थी पनपता है। यदि घर, समुदाय, विश्वविद्यालय परिसर और डिजिटल स्पेस लगातार किसी विशेष विचारधारा, भय, असुरक्षा या शत्रु-कल्पना को पोषित कर रहे हो, तो शिक्षा का तटस्थ ज्ञान उसके सामने कमज़ोर पड़ने से अतंत ऊपरांग, तकनीकी दक्ष और सफल पेशेवर भी कट्टर विचारों के शिक्षकों में फैल जाते हैं।

विज्ञान पहाड़ा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखना दो अलग बातें हैं। यदि सामाजिक परिवेश किसी व्यक्ति को भय, अस्तित्व या 'दूसरे' के प्रति नफरत से भर दे, तो पढ़ा-लिखा भी भवनात्मक जाल में फैल जाता है। डिजिटल दुनिया की भास्माक सूचनाएं, पढ़ीज़-योरियां और लक्षित दुश्चार युवा दिमागों को लगातार अपावित कर रही हैं। संशल नीटियों पर एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सांविधानिक दृष्टिकोण, शिक्षाविद्यालय अपने लाभ हेतु व्यक्ति को उसी सामग्री की ओर धकेलता है, जो उसकी मानविकता को भाए। उसके गुरुसे, असंतोष और पूर्वांगों को भजूँत करे। सूचना की अधिकता और ज्ञान की कमी अक्सर विवेक को कुंद कर दीती है। राष्ट्रभक्ति और मानवीयता किसी डिग्री की अनिवार्य उप-उत्पाद नहीं है, वे संस्कार, संवाद और विवेक से विकसित होती इसलिए एक कुशल पेशेवर, डॉक्टर, ईज़ानियर या शोधकर्ता स्वाभाविक रूप से देशपक्षत, ताकिंक और उदार विचारों वाला नारायणिक भी होगा इसकी कोई गारंटी नहीं। सरकार और समाज को इसके लिए मिलकर प्रयास करना होगा। शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सांविधानिक दृष्टिकोण और सामाजिक नैतिकता अनिवार्य: शामिल हो। कट्टरवाहा रोकने में परिवार, समुदाय, शिक्षाकार्यक्रम संस्थानों समन्वित शूमिका किया जाए। युवाओं को रोजगार, अक्सर और सकारात्मक उद्देश्य उपलब्ध कराए जाएं, क्योंकि बोरोजगारी कट्टरवाहा की उंचर भूमि है। विद्यालय-महाविद्यालयों में इस तरह का भी पालयक्रम हो, जो विभिन्न सामग्रीयों द्वारा दुश्चार को समझने में सक्षम बनाए। डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर भावनाक सामग्री और नफरत फैलाने वाले तंत्रों पर कठोर निरानी हो। राज्यपाल की चिंता इसलिए समीक्षी है, क्योंकि आतंकवाद अब केवल सामाजिक हाशिए से नहीं, बल्कि शिक्षित वर्ग से भी भोषण पा रहा है। इसे रोकना केवल सुरक्षा एजेंसियों का कार्य नहीं, यह समाज, शिक्षा और शासन तीनों की साझा जिम्मेदारी है।

### प्रसंगवथा

## आत्मनिर्भरता और सामाजिक अस्तित्व के प्रतीक बिरसा मुंडा

हमारा स्वतंत्रता संग्राम देश के उन असंख्य बलिदानियों के त्याग और समर्पण की कहानी बायं करता है, जिन्होंने अपना जीवन, घर-परिवार, सुख-चैन और जवानी सब कुछ देश के लिए समर्पित कर दिया। ऐसे ही महान क्रांतिकारियों में एक नाम ही भावनान विस्तार मुंडा, जो उनकी 150 वीं जयंती के अवसर पर आवश्यक है कि हम राष्ट्र प्रेम, सामाजिक अस्तित्व, प्रकृति संरक्षण एवं आत्मनिर्भरता के उनके संदर्भों को जन-जनक तक पहुँचाएं और उनके आदर्शों को अनुपालन करें।

भगवान विरसा मुंडा भारत के इतिहास में अद्यत्य साहस्र, अंसर्विभान के प्रतीक के रूप में पूजे जाते हैं। उनका जन्म 15 नवंबर 1875 को बांगला

प्रेसीडेंसी, वर्तमान में झारखण्ड के उल्हास गाँव, जिला खुंडी में मुंडा

जन्मजाति में हुआ था। होश संभालने के बाद से ही उनका ध्यान समाज की गरीबी पर केंद्रित रहा, क्योंकि आदिवासियों को जीवन कई अभावों से भरा हुआ था, जिसका फायदा इसाई मिशनरी उड़ा रही थी और उनकी गरीबी को ईश्वरीय प्रकार कहकर, उन्हें भाव खिलाने तथा कर्पेंट देने के नाम पर उनका धर्म परिवर्तन किया जा रहा था। 20 वर्ष की उम्र में उन्होंने समाज से धर्म और संस्कृति से जुड़े की सलाह देने के साथ ही मिशनरियों

को जन-जनक तक पहुँचाएं और उनके आदर्शों को अनुपालन करें।

भगवान विरसा मुंडा भारत के इतिहास में अद्यत्य साहस्र, अंसर्विभान के प्रतीक के रूप में पूजे जाते हैं। उनका जन्म 15 नवंबर 1875 को बांगला

प्रेसीडेंसी, वर्तमान में झारखण्ड के उल्हास गाँव, जिला खुंडी में मुंडा

जन्मजाति में हुआ था। होश संभालने के बाद से ही उनका ध्यान समाज की गरीबी पर केंद्रित रहा, क्योंकि आदिवासियों को जीवन कई अभावों से भरा हुआ था, जिसका फायदा इसाई मिशनरी उड़ा रही थी और उनकी गरीबी को ईश्वरीय प्रकार कहकर, उन्हें भाव खिलाने तथा कर्पेंट देने के नाम पर उनका धर्म परिवर्तन किया जा रहा था। 20 वर्ष की उम्र में उन्होंने समाज से धर्म और संस्कृति से जुड़े की सलाह देने के साथ ही मिशनरियों

को जन-जनक तक पहुँचाएं और उनके आदर्शों को अनुपालन करें।

भगवान विरसा मुंडा भारत के इतिहास में अद्यत्य साहस्र, अंसर्विभान के प्रतीक के रूप में पूजे जाते हैं। उनका जन्म 15 नवंबर 1875 को बांगला

प्रेसीडेंसी, वर्तमान में झारखण्ड के उल्हास गाँव, जिला खुंडी में मुंडा

जन्मजाति में हुआ था। होश संभालने के बाद से ही उनका ध्यान समाज की गरीबी पर केंद्रित रहा, क्योंकि आदिवासियों को जीवन कई अभावों से भरा हुआ था, जिसका फायदा इसाई मिशनरी उड़ा रही थी और उनकी गरीबी को ईश्वरीय प्रकार कहकर, उन्हें भाव खिलाने तथा कर्पेंट देने के नाम पर उनका धर्म परिवर्तन किया जा रहा था। 20 वर्ष की उम्र में उन्होंने समाज से धर्म और संस्कृति से जुड़े की सलाह देने के साथ ही मिशनरियों

को जन-जनक तक पहुँचाएं और उनके आदर्शों को अनुपालन करें।

भगवान विरसा मुंडा भारत के इतिहास में अद्यत्य साहस्र, अंसर्विभान के प्रतीक के रूप में पूजे जाते हैं। उनका जन्म 15 नवंबर 1875 को बांगला

प्रेसीडेंसी, वर्तमान में झारखण्ड के उल्हास गाँव, जिला खुंडी में मुंडा

जन्मजाति में हुआ था। होश संभालने के बाद से ही उनका ध्यान समाज की गरीबी पर केंद्रित रहा, क्योंकि आदिवासियों को जीवन कई अभावों से भरा हुआ था, जिसका फायदा इसाई मिशनरी उड़ा रही थी और उनकी गरीबी को ईश्वरीय प्रकार कहकर, उन्हें भाव खिलाने तथा कर्पेंट देने के नाम पर उनका धर्म परिवर्तन किया जा रहा था। 20 वर्ष की उम्र में उन्होंने समाज से धर्म और संस्कृति से जुड़े की सलाह देने के साथ ही मिशनरियों

को जन-जनक तक पहुँचाएं और उनके आदर्शों को अनुपालन करें।

भगवान विरसा मुंडा भारत के इतिहास में अद्यत्य साहस्र, अंसर्विभान के प्रतीक के रूप में पूजे जाते हैं। उनका जन्म 15 नवंबर 1875 को बांगला

प्रेसीडेंसी, वर्तमान में झारखण्ड के उल्हास गाँव, जिला खुंडी में मुंडा

जन्मजाति में हुआ था। होश संभालने के बाद से ही उनका ध्यान समाज की गरीबी पर केंद्रित रहा, क्योंकि आदिवासियों को जीवन कई अभावों से भरा हुआ था, जिसका फायदा इसाई मिशनरी उड़ा रही थी और उनकी गरीबी को ईश्वरीय प्रकार कहकर, उन्हें भाव खिलाने तथा कर्पेंट देने के नाम पर उनका धर्म परिवर्तन किया जा रहा था। 20 वर्ष की उम्र में उन्होंने समाज से धर्म और संस्कृति से जुड़े की सलाह देने के साथ ही मिशनरियों

को जन-जनक तक पहुँचाएं और उनके आदर्शों को अनुपालन करें।

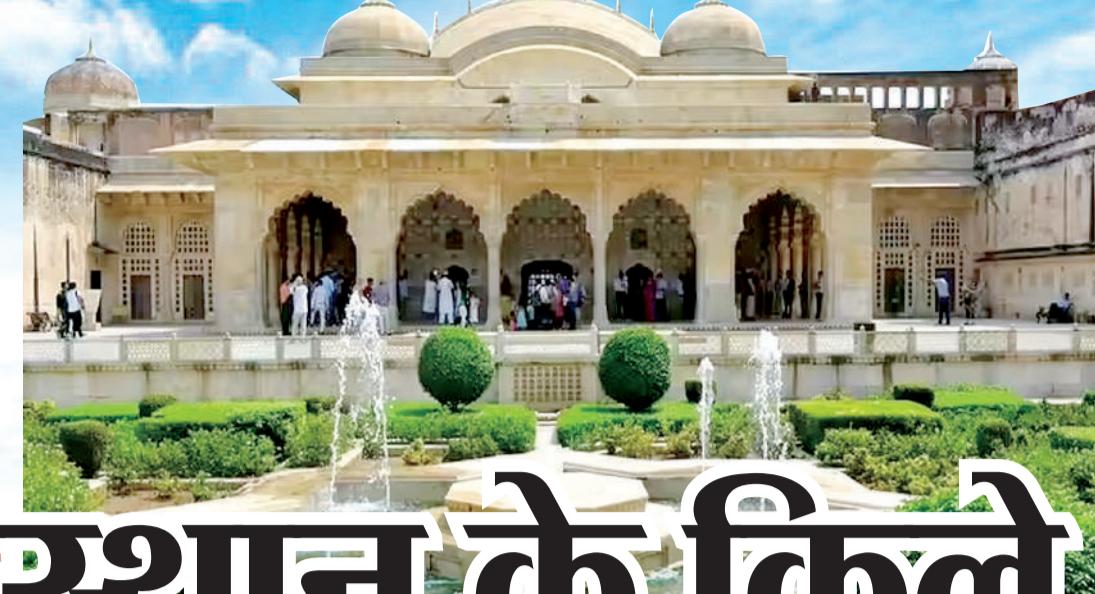
भगवान विरसा मुंडा भारत के इतिहास में अद्यत्य साहस्र, अंसर्विभान के प्रतीक के रूप में पूजे जाते हैं। उनका जन्म 15 नवंबर 1875 को बांगला

प्रेसीडेंसी, वर्तमान में झारखण्ड के उल्हास गाँव, जिला खुंडी में मुंडा

जन्मजाति में हुआ था। होश संभालने के बाद से ही उनका ध्यान समाज की गरीबी पर केंद्रित रहा, क्योंकि आदिवासियों को जीवन कई अभावों से भरा हुआ था, जिसका फायदा इसाई मिशनरी उड़ा रही थी और उनकी गरीबी को ईश्वरीय प्रकार कहकर, उन्हें भाव खिलाने तथा कर्पेंट देने के नाम पर उनका धर्म परिवर्तन किया जा रहा था। 20 वर्ष की उम्र में उन्होंने समाज से धर्म और संस्क

ए

जस्थान अपनी समृद्ध और जीवंत सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है, जिसमें भव्य किले और महल, अद्वितीय कलाकृतियां, हस्तशिल्प और 'धूमर' व 'कालबेलिया' जैसे प्रसिद्ध लोक नृत्य इसे पूरी दुनिया में चर्चित करते हैं। यहां के किले स्थापत्य भव्यता, जटिल नक्काशी और विभिन्न स्थापत्य शैलियों के मिश्रण के लिए भी जाने जाते हैं। यहां कई ऐसे किले हैं, जो भारत नहीं, बल्कि विदेशी पर्यटकों के बीच खासे प्रसिद्ध हैं। उन्हें देखने के लिए हर मौसम में विदेशों से बड़े पैमाने पर पर्यटक आते हैं। राजस्थान के जैसलमेर शहर में एक किला है, जो लोगों के आकर्षण का केंद्र है। त्रिकुटा हिल पर बने जैसलमेर किला अपनी बेहतरीन संरचना के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। अगर आप धूमने के शौकीन हैं, तो इस किले को देखने जरूर जाएं।

डॉ. विकास शुक्ला  
कानपुर

# राजस्थान के किले जीवंत संस्कृति की विरासत

## 1156 में स्थापित हुआ किला

जैसलमेर किले की स्थापना वर्ष 1156 में भाटी राजपूत महाराजा रावल जैसल ने कराया था। 1294 के आसपास इस साम्राज्य पर अलाउद्दीन खिलजी ने अक्रमण किया था और उसके सेना ने इसे करीब ना साल तक घेर कर रखा। 1558 के आसपास रावल लूनाराज के शासन के दीरान, विले पर अमीर अली ने झला किया था। इसके बाद ही तकालीन महाराजा ने अपनी पुरी की शादी अकबर से कर दी थी। मुलानों का संरक्षण मिलने से किला बच गया था। यह किला दुनिया के सबसे बड़े रेशेतकान में स्थापित किला है। यह राजस्थान का धूमरा अति प्राचीन किला भी है। यह किला 1762 तक मुगलों के नियत्रण में रहा, उसके बाद महारावल मूलराज ने विले पर नियत्रण कर लिया। दिसंबर 1818 में ईरट इंडिया कंपनी और महारावल मूलराज के बीच संधि हुई थी। इसमें तय हुआ था कि किले का नियत्रण मूलराज के पास हो रहा। 1820 में मूलराज की पूर्युता के बाद, उनके पोते गज सिंह किले का नियत्रण विरासत में भिन्ना था।

■ पीले बलुआ पत्थर से निर्मित यह किला यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल है। पर्यटक विशेष रूप से यहां सुर्यास्त देखने आते हैं। सूर्य की किरणें पूरे किले की शोभा बढ़ाती हैं। पीली दीवारें, सूरज की किरणें से मानों नहा सी जाती हैं। इस खूबसूरती के कारण ही इसे सोना किला या स्वर्ण किला भी कहा जाता है। यहां कुछ हवलियां भी हैं, जिनमें पटवाओं की हवेली, नथमल की हवेली, सलाम सिंह की हवेली शामिल हैं। इस किले में राजपुताना और इस्लामी शैली एक साथ दिखती है।

■ उदयपुर का किला- उदयपुर का किला अब सिर्फ पैलेस के नाम से जाना जाता है। यह पिछोला झील के किनारे स्थित है। इसका निर्माण 16 वीं शताब्दी में राजा उदयसिंह द्वितीय ने कराया था। इसके अंदर कई भव्य महल व एक भगवान जगदीश का मंदिर भी है।

■ चित्तोड़ किला- ऐतिहासिक किले का निर्माण मौर्य वंश के राजा चित्रांगद ने सातवीं शताब्दी में कराया था। इस किले पर मौर्य, गुहिलवंश, परमार, सोलंकी आदि अनेक वंशों ने शासन किया। 1174 ई. के आसपास पुनः गुहिलवंशियों ने इस पर अधिकार कर लिया था। इस किले को 2013 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर का दर्जा प्रदान दिया गया है।

■ मेहरानगढ़ किला- ऊधपुर में स्थित मेहरानगढ़ किला 124 मीटर की चार्चाएँ एक पहाड़ी पर स्थित है। इसकी नींव जोधपुर के 15 वें शासक राव जोधा ने 1459 में रखी थी। बाद महाराजा जसवंत

सिंह ने 1638 से 78 के मध्य किले के निर्माण कार्य को पूरा करवाया। 10 किलोमीटर लंबी दीवार किले को घेरे हुए हैं। किले के अंदर कई भव्य महल रिस्तहाल के नाम से जाना जाता है।

■ सिरिया पैलेस- महाराजा सवाई जय सिंह ने 1729 से 1732 के मध्य किले का निर्माण कराया था, अब इस सिरिया पैलेस के रूप में जाना जाता है। यह एक राजस्थानी व मुगल शैलियों की मिश्रित रचना है। यहां धूमर के लिए बड़े पैमाने पर पर्यटक आते हैं।

■ उम्मेद भवन- उम्मेद भवन राजस्थान की शान है। इसका निर्माण राठोर राजवंश के शासक राजा उम्मेद सिंह ने बनवाया था। इसके निर्माण की योजना



■ हवा महल- जयपुर स्थित जल महल के समीप ही हवा महल है। 799 में महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने इसकी स्थापना कराई थी। यह एक पांच मंजिला इमारत है। इसका आकार मधुमक्खी के छते की तरह दिखता है।

तैयार करने के लिए वास्तुकार हेनरी लोनचेस्टर को चुना गया था। महल के तीन हिस्से हैं। एक में उम्मेद होटल है, तो दूसरा हिस्सा शाही परिवार के पास है, जबकि तीसरे हिस्से में संग्रहालय स्थापित है।

■ राणथंभौर किला- सवाई माधोपुर में स्थित राणथंभौर किला की स्थापना राजा सज्जन वीर सिंह ने कराया था। दो पहाड़ियों के मध्य में स्थित यह किला अपनी वास्तुकाल के लिए प्रसिद्ध है। इस दुर्ग की सबसे अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासनकाल 1282-1301 में रही। 1301 में इस किले पर अलाउद्दीन खिलजी ने कब्जा कर लिया। इसके पश्चात 18 वीं सदी के मध्य तक इस पर मुगलों

का अधिकार रहा।

■ आमेर का किला- जयपुर से 11 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ी के ऊपर आमेर का किला स्थित है। इसकी स्थापना का कार्य 1592 में राजा मानसिंह प्रथम ने कराया था। यह लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर से

बना है, जिसमें हिंदू और मुलाल वास्तुकाल का मध्य से अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासनकाल 1282-1301 में रही। 1301 में इस किले पर अलाउद्दीन खिलजी ने कब्जा कर लिया। इसके पश्चात 18 वीं सदी के मध्य तक इस पर मुगलों

का अधिकार रहा।

■ आमेर का किला- जयपुर से 11 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ी के ऊपर आमेर का किला स्थित है। इसकी स्थापना का कार्य 1592 में राजा मानसिंह प्रथम ने कराया था। यह लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर से

बना है, जिसमें हिंदू और मुलाल वास्तुकाल का मध्य से अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासन के लिए प्रसिद्ध है। इस दुर्ग की सबसे अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासनकाल 1282-1301 में रही। 1301 में इस किले पर अलाउद्दीन खिलजी ने कब्जा कर लिया। इसके पश्चात 18 वीं सदी के मध्य तक इस पर मुगलों

का अधिकार रहा।

■ आमेर का किला- जयपुर से 11 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ी के ऊपर आमेर का किला स्थित है। इसकी स्थापना का कार्य 1592 में राजा मानसिंह प्रथम ने कराया था। यह लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर से

बना है, जिसमें हिंदू और मुलाल वास्तुकाल का मध्य से अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासन के लिए प्रसिद्ध है। इस दुर्ग की सबसे अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासन के लिए प्रसिद्ध है। इस दुर्ग की सबसे अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासन के लिए प्रसिद्ध है। इस दुर्ग की सबसे अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासन के लिए प्रसिद्ध है। इस दुर्ग की सबसे अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासन के लिए प्रसिद्ध है।

■ आमेर का किला- जयपुर से 11 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ी के ऊपर आमेर का किला स्थित है। इसकी स्थापना का कार्य 1592 में राजा मानसिंह प्रथम ने कराया था। यह लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर से

बना है, जिसमें हिंदू और मुलाल वास्तुकाल का मध्य से अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासन के लिए प्रसिद्ध है। इस दुर्ग की सबसे अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासन के लिए प्रसिद्ध है। इस दुर्ग की सबसे अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासन के लिए प्रसिद्ध है।

■ आमेर का किला- जयपुर से 11 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ी के ऊपर आमेर का किला स्थित है। इसकी स्थापना का कार्य 1592 में राजा मानसिंह प्रथम ने कराया था। यह लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर से

बना है, जिसमें हिंदू और मुलाल वास्तुकाल का मध्य से अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासन के लिए प्रसिद्ध है। इस दुर्ग की सबसे अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासन के लिए प्रसिद्ध है।

■ आमेर का किला- जयपुर से 11 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ी के ऊपर आमेर का किला स्थित है। इसकी स्थापना का कार्य 1592 में राजा मानसिंह प्रथम ने कराया था। यह लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर से

बना है, जिसमें हिंदू और मुलाल वास्तुकाल का मध्य से अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासन के लिए प्रसिद्ध है। इस दुर्ग की सबसे अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासन के लिए प्रसिद्ध है।

■ आमेर का किला- जयपुर से 11 किलोमीटर की दूरी पर पहाड़ी के ऊपर आमेर का किला स्थित है। इसकी स्थापना का कार्य 1592 में राजा मानसिंह प्रथम ने कराया था। यह लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर से

बना है, जिसमें हिंदू और मुलाल वास्तुकाल का मध्य से अधिक स्थायी हमीर देव चौहान के शासन के लिए प्रसिद्ध है। इस दुर्ग की सबसे अ





